संपादकीय जागरण

शुक्रवार, 26 जनवरी, 2018 : माघ शुक्ल 9 वि. 2074

राष्ट्र की सेवा ही सच्ची देशभक्ति है

देश के नाम जरूरी संदेश

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के राष्ट्र के नाम संदेश से यह स्पष्ट है कि हाल की उन घटनाओं पर उनकी गहरी नजर है जो किसी न किसी रूप में देश को प्रभावित कर रही हैं। शायद यही कारण रहा कि गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर बतौर राष्ट्रपति राष्ट्र के नाम अपने पहले संदेश में उन्होंने इसे खास तौर पर रेखांकित किया कि किसी के नजरिये या इतिहास की किसी घटना के बारे में हम असहमत हो सकते हैं, लेकिन इस दौरान हमें उदारतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उन्होंने ऐसे व्यवहार को भाईचारा की संज्ञा दी और एक तरह से यह बताया कि इससे उलट व्यवहार सामाजिक ताने-बाने को क्षति पहुंचाता है। इसमें कोई संशय नहीं कि राष्ट्रपति ने उन लोगों को संबोधित किया जो फिल्म पद्मावत के विरोध में घोर अराजकता का परिचय देने में लगे हुए हैं। पता नहीं ऐसे लोग समाज और देश को शर्मसार करने वाले अपने अराजक व्यवहार का परित्याग करेंगे या नहीं, लेकिन उन्हें यह आभास हो जाए तो अच्छा कि वे अपने हाथों अपने मुख पर कालिख पोतने का काम कर रहे हैं। अफसोस इस पर है कि यह अराजक व्यवहार ऐसे समय हो रहा है जब दुनिया भारत की ओर देख रही है। सभ्य समाज में वैसे व्यवहार के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता जैसा कई शहरों में इन दिनों देखने को मिल रहा है। यह बिल्कुल भी ठीक नहीं कि जब देश अपना 69वां गणतंत्र दिवस मना रहा है तब यह नए सिरे से दिख रहा कि अभी हमें एक परिपक्व और जिम्मेदार राष्ट्र के नागरिक के तौर पर आचरण करना सीखना शेष है। इससे भी अधिक चिंताजनक यह है कि अब कई बार उन मसलों पर कहीं अधिक उग्र रवैया प्रदर्शित किया जाता है जिन पर पहले संयम का परिचय दिया जाता था। आखिर अब इतनी अधीरता और खासकर अराजकता क्यों? यह वह प्रश्न है जिस पर आम लोगों को विचार करना होगा।

इस पर चिंतन-मनन करने का गणतंत्र दिवस से बेहतर अवसर और कोई नहीं हो सकता कि बतौर नागरिक हम राष्ट्र की अपेक्षाओं को पूरा कर रहे हैं या नहीं? यह अच्छा हुआ कि राष्ट्रपति ने अपने संदेश के जरिये महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोगों के समक्ष भी यह स्पष्ट किया कि उन्हें भी अपने रुख-रवैये में परिवर्तन लाने, परिपक्वता प्रदर्शित करने और वंचितों की खास चिंता करने की जरूरत है। उनकी यह टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट के हाल के विवाद के संदर्भ में भी मानी जाएगी कि अनुशासित और नैतिकता से पूर्ण संस्थाओं से ही एक अनुशासित और नैतिक राष्ट्र का निर्माण होता है। निश्चित तौर पर इस टिप्पणी के दायरे में हमारे नीति-नियंता और राजनीतिक वर्ग भी आता है। बतौर गणतंत्र हमने बहुत कुछ अर्जित किया है और इसीलिए दुनिया में भारत का मान और भारतीयों का आत्मविश्वास बढ़ा है, लेकिन इससे भी इन्कार नहीं कि अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है और उसके लिए शासन-प्रशासन के तौर-तरीकों में व्यापक बदलाव की जरूरत है। इस जरूरत की पूर्ति हो, इसके लिए हर किसी को अपने-अपने स्तर पर सक्रिय होना होगा, क्योंकि नए भारत का निर्माण इसी तरह हो सकता है।

उत्तर प्रदेश दिवस

उत्तर प्रदेश ने अपनी स्थापना के 68 वर्ष पूरे कर लिए हैं। पहले यह संयुक्त प्रांत के नाम से जाना जाता था, लेकिन 24 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश के नाम से भारतीय संघ का राज्य बना। एक से एक दिग्गज नेता इस प्रदेश ने दिए, लेकिन पहली बार इस राज्य ने स्थापना की वर्षगांठ जोश और उत्साह के साथ मनाई। उप्र दिवस के माध्यम से प्रदेश की कला, शिल्प व संस्कृति का संदेश पूरे विश्व में भेजने का प्रयास किया गया। इसकी जरूरत खासतौर से थी, क्योंकि उत्तर प्रदेश ने अब औद्योगिक क्रांति के पथ पर कदम बढ़ा दिए हैं, लेकिन अतीत के गौरव, संस्कृति और खूबियों को भी याद रखना जरूरी है। यही कारण है कि प्रदेश ने एक ओर विरासत का यादगार जश्न मनाया वहीं भविष्य को संवारने का खाका भी खींचा। योगी सरकार ने लोगों को 25 हजार करोड़ की योजनाएं सौगात में दीं।

> उत्तर प्रदेश ने अब औद्योगिक क्रांति के पथ पर कदम बढ़ा दिए हैं, लेकिन अतीत के गौरव, संस्कृति और खूबियों को भी याद रखना जरूरी है

हालांकि उप्र दिवस मनाने की प्रेरणा राज्यपाल राम नाईक ने दी। उनका स्पष्ट कहना था कि जो समाज अपने अतीत पर गर्व नहीं कर सकता, उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। वस्तुतः उत्तर प्रदेश वासियों को गर्व करने का यह मौका तो मिला ही, यूपी को बीमारू राज्य की संज्ञा से मुक्त करके का भी रास्ता मिल गया है। एक जिला-एक उत्पाद योजना से आगामी दिनों में प्रदेश के 20 लाख लोगों को रोजगार व नौकरी हासिल होगी। वहीं हर जिले की खूबियां भी निखर कर सामने आएंगी। विचारणीय यही है कि देश के 24 राज्य स्थापना दिवस मनाते हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश में अभी तक इस दिशा में ध्यान ही नहीं दिया गया था।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

... और मनमानी के पथ पर आगे बढ़ता करणी सेना का दस्ता

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या आपको लगता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वैश्विक नेता के रूप में उभर रहे हैं?

आज का सवाल

क्या आपको लगता है कि भारत को दक्षेस के बजाय आसियान पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करना चाहिए?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y –हां, N–नहीं, C–कह नहीं सकते

परिणाम एसएमएस से प्राप्त नतीजों के साथ जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

गुणात्मक परिवर्तन चाहता गणतंत्र

डॉ. एके वर्मा

गणतंत्र दिवस यांत्रिक रूप से मनाया जाने वाला पर्व मात्र न होकर व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम बनना चाहिए

प्रतिवर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाते हुए हम आमतौर पर उन्हीं संकल्पों को दोहराते हैं जो हमने 26 जनवरी, 1950 को लिए थे। इसी दिन हमारा संविधान लागू हुआ था जिसे जनता ने स्वयं बनाकर, स्वयं स्वीकार कर, स्वयं को ही समर्पित किया था था। यह ऐसा संविधान है जिसकी पूरे विश्व में प्रशंसा हुई और जिसने इंग्लैंड के राजतंत्र को समाप्त कर भारत की जनता का शासन स्थापित किया। इस संविधान ने न केवल एक संप्रभु, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य स्थापित किया, वरन न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के उन मूल्यों को अपने गणराज्य का आधार बनाया जो व्यक्ति की गरिमा और देश की एकता एवं अखंडता को बनाए रख सकें। गणतंत्र दिवस पर प्रायः लोगों के मन में कौतूहल होता है कि इस बार गणतंत्र पर्व में नयापन क्या है? इस प्रश्न का उत्तर हमें अपने राष्ट्रगान में ही मिल जाता है। राष्ट्रगान हमें यह संदेश देता है कि हमारा गणतंत्र स्थायित्व और परिवर्तन का अद्भुत संगम है। इसमें जहां 'विंध्य-हिमाचल' के पर्वत स्थायित्व हैं तो 'गंगा-जमुना' जैसी नदियां परिवर्तन की प्रतीक हैं जहां 'जलधि' अर्थात समुद्र स्थायित्व तो 'उच्छल तरंगा' अर्थात ऊंची-ऊंची समुद्री तरंगें परिवर्तन की प्रतीक हैं। इसी प्रकार जब हम 'अधिनायक जय हे' गाते हैं तो 'अधिनायकत्व' तो स्थायित्व दर्शाता है, लेकिन 'मूर्त व्यक्ति' अर्थात इंग्लैंड के राजा से अमूर्त 'राष्ट्रीय ध्वज' और संविधान को अपना अधिनायक मानने में राजतंत्र से लोकतंत्र के बदलाव की खुशबू आती है, लेकिन क्या हम अपने इस नए-अधिनायक अर्थात राष्ट्रध्वज को जानते भी हैं जो एक ऐसे संविधान से उपजा जिसे हमने स्वयं बनाया?

यदि हम अपने संविधान को ठीक से नहीं जानते-समझते तो क्या गणतंत्र दिवस पर ली गई हमारी सभी प्रतिज्ञाएं अर्थहीन नहीं? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि हम संविधान को वास्तविक रूप में जानने की स्थिति में नहीं हैं तो उसमें व्यक्त संकल्प हमारे लिए 'थोथे' शब्द होकर रह जाते हैं, फिर उन्हें सही अर्थों में मानने का सवाल ही पैदा नहीं होता। यह बात देश में उन 26 प्रतिशत लोगों पर ही लागू नहीं होती जो लिख-पढ़ नहीं सकते, वरन उन 74 प्रतिशत शिक्षित एवं साक्षर लोगों पर खासतौर से लागू होती है जो संविधान पढ़ सकते हैं। अपने अनुभव से हम जानते हैं कि देश में संविधान को पूरी तरह से पढ़ने-समझने वाले लोग अंगुलियों पर हैं। क्यों हम अपने संविधान को ऐसा बनाए हुए हैं कि जिस जनता को उसे पढ़ना-समझना चाहिए वह उसे समझ ही नहीं पाती? इतने विशालकाय, कठिन और कानूनी भाषा में बने संविधान को पढ़ने के लिए किसके पास समय और समझ है? इस बात का प्रयास होना चाहिए कि एक विधिक दस्तावेज की जगह संविधान का सरल, संक्षिप्त और पठनीय 'जन-संस्करण' उपलब्ध हो जिसकी खास बातों को जनता आसानी से समझ और आत्मसात कर सके। यह इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि जनता को यह समझना बहुत जरूरी है कि वे कौन से संवैधानिक मूल्य हैं जिनमें स्थायित्व है और जो बदल नहीं सकते। हां, समय के साथ उनके भाव बदल सकते हैं जैसे गंगा में तो स्थायित्व है, लेकिन उसकी प्रवाहमयी धारा में बदलाव अंतर्निहित है। इसी स्थायित्व और बदलाव को समझने के लिए जनता को उन मूल्यों पर लगातार चर्चा करते रहना चाहिए जिनको संविधान में स्थान दिया गया है।

अवधेश राजपूत

परिवर्तन को लेकर प्रत्येक समाज संवेदनशील होता है। प्रत्येक देश में 'यथास्थितिवाद और परिवर्तन' का द्वंद्व चलता रहता है, लेकिन परिवर्तन तो शाश्वत नियम है। यह जरूर है कि लोकतंत्र में परिवर्तन गहन विचारमंथन, वाद-विवाद, लेकिन जन सहमति पर आधारित होता है। आज 69वें गणतंत्र दिवस पर मुद्दा यह होना चाहिए कि भारतीय गणतंत्र में क्या परिवर्तन अपेक्षित है? स्वतंत्रता के बाद पिछले सत्तर वर्षों में एक बिल्कुल ऐसी नई पीढ़ी आ गई है जो स्वयं को स्वतंत्रता संग्राम, क्रांतिकारियों की कुर्बानियों, राष्ट्रनिर्माण की समस्याओं, संविधान की श्रेष्ठता और अपने गौरवशाली इतिहास से स्वयं को 'कनेक्ट' नहीं कर पा रही है, लेकिन इस पीढ़ी में उन सबको जानने की ललक जरूर है। उसमें स्वयं आगे बढ़ने का भाव भी है और देश और समाज के लिए कुछ करने का जज्बा भी। वैश्वीकरण के युग में जब नई पीढ़ी के युवा विदेशों में पढ़ने और नौकरी करने जाते हैं तो उनके सामने अपने देश के गौरव को प्रस्तुत करने में कठिनाई आती है। आज हम गर्व करते हैं कि हम एक युवा समाज हैं और 65 प्रतिशत लोग 35 वर्ष की आयु से कम हैं। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि जन आंदोलन के माध्यम से नई पीढ़ी को वह सब कुछ बताया जाए जिसे जानने के वे हकदार हैं ताकि गणतंत्र दिवस प्रतिवर्ष यांत्रिक रूप से मनाया जाने वाला पर्व मात्र न होकर संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करने और व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बन सके।

भारतीय लोकतंत्र में गणतंत्र स्थायित्व, लेकिन सरकारें परिवर्तन की प्रतीक हैं। सरकारें बदलती रहती हैं, लेकिन गणतंत्र अक्षुण्ण है। जब सरकारें परिवर्तन की संवाहक हैं तो जनता उनसे किस प्रकार के परिवर्तन की उम्मीद करती है? भारत जैसे देश में, जहां सदियों से 'माई-बाप' सरकार की संस्कृति रही हो, वहां बदलाव में निश्चित ही कुछ वक्त लगेगा। कानून बदले हैं, प्रक्रियाएं बदली हैं, लेकिन नहीं बदलती तो हमारी मानसिकता। स्वतंत्रता के लगभग 70 वर्ष बाद भी सत्ता के गलियारों, प्रशासनिक दफ्तरों और पुलिसिया थानों की मानसिकता अभी नहीं बदली। अभी भी वही रौब-दाब, वही 'माई-बाप' और वही उत्पीड़न बरकरार है। जब जनता रोज-रोज की जिंदगी में उनसे रूबरू होती है तो उसे अपने लोकतंत्र में एक ऐसा ठहराव दिखाई देता है कि उसे गणतंत्र के संकल्प बेमानी लगने लगते हैं। क्या कोई सरकार इसमें परिवर्तन का साहस करेगी? मोदी सरकार ने कुछ लगाम जरूर लगाई है, लेकिन उन 29 राज्यों और सात केंद्र-शासित क्षेत्रों की सरकारों का भी इस संबंध में कोई दायित्व बनता है, क्योंकि जनता रोज-रोज के कामों के लिए तो राज्य सरकारों और स्थानीय सरकारों के ही चक्कर लगाती है।

राजनीतिक और प्रशासनिक संस्थाएं क्रमशः राजनीतिक एवं प्रशासकीय संस्कृति पर आधारित होती हैं। दुर्भाग्य से देश में राजनीतिक और प्रशासनिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं में तो कुछ बदलाव हुए, लेकिन राजनीतिक एवं प्रशासकीय संस्कृति में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। राजनीतिक एवं प्रशासकीय संस्कृति हमारी सामाजिक संस्कृति से जुड़ी होती है, लेकिन हम सामाजिक संस्कृति में कोई सकारात्मक बदलाव नहीं कर पाए हैं, बल्कि कुछ नकारात्मक परिवर्तन उसमें जरूर हुए हैं। गणतंत्र के इस पावन पर्व पर जनता सरकारों से ऐसे परिवर्तन की उम्मीद करती है जिसमें वे राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासकीय संस्कृति में ऐसे गुणात्मक परिवर्तन करें जिससे गणतंत्र के संकल्पों और संविधान के मूल्यों में उसका विश्वास पुनः जागृत हो सके।

(लेखक सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसाइटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

जनतांत्रिक मूल्यों का विकास

बद्री नारायण

जनतंत्र के उचित रूप से प्रसार के लिए कल्पनाशील समाज ही सर्वाधिक उपयुक्त भावभूमि होती है

एक ऐसे समय जब देश गणतंत्र दिवस मना रहा है तब कई राज्यों में 'पद्मावत' फिल्म को लेकर उभरा विवाद शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। यह विवाद जिस तरह भड़का उससे कहीं न कहीं यह रेखांकित होता है कि हमें एक परिपक्व राष्ट्र बनने के लिए काफी कुछ करना है। पद्मावत फिल्म में चित्रित पद्मावती को भारतीय समाज का एक वर्ग अपनी 'अस्मिता प्रतीक' के रूप में लेकर आंदोलित है। आरंभ में इस फिल्म का नाम 'पद्मावती' था, लेकिन सेंसर बोर्ड द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति के सुझाव पर इसे 'पद्मावत' कर दिया गया। विशेषज्ञ समिति एवं सेंसर बोर्ड के सुझाव पर फिल्म के कथावस्तु एवं प्रारूप में भी कई परिवर्तन किए गए, फिर भी फिल्म का विरोध जारी रहा। यह जानना रोचक है कि रानी पद्मावती का चरित्र मूलतः उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र की एक अवधी लोककथा 'रानी पद्मावती एवं हीरामन सुआ की कथा' से विकसित हुआ है। उत्तर प्रदेश के ही जायस के रहने वाले प्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने इसी लोककथा को मूलाधार बनाते हुए, इसके साथ नाथपंथी प्रतीकों एवं संदेशों को जोड़ते हुए उनका मध्यकालीन इतिहास के चरित्रों यथा अलाउद्दीन खिलजी, रतनसेन, पद्मावती को प्रतीक में रूपांतरित करते हुए बेजोड़ काव्य 'पद्मावत' की रचना की। इस काव्य में सिंहलगढ़ को ज्ञान की नगरी का प्रतीक माना गया है, जो नाथपंथी साहित्य में उत्तर बौद्धों एवं नाथपंथियों का सिद्धपीठ रहा है।

यहां नाथपंथी योगियों को ज्ञान अर्जित करने के लिए जाना होता था। यहां माया के अनेक रूप अर्थात सुंदर स्त्रियां उन्हें भरमाने को कोशिश करती थीं। अवधी लोककथा में चित्रित हीरामन सुग्गा एक अद्भुत तोता है, जो सिंहलगढ़ की राजकुमारी पद्मावती का अत्यंत प्रिय है। वह सिंहलगढ़ से उड़ता है तो उसे एक बहेलिया पकड़ लेता है। बहेलिया उसे एक ब्राह्मण के हाथ बेच देता है। ब्राह्मण उसे चित्तौड़गढ़ राजा के दरबार में लाता है। राजा रतनसेन 'हीरामन सुआ' के मुख से रानी पद्मावती का बखान सुनकर उस पर मोहित हो जोगी बन सिंहलगढ़ की तरफ चल देते हैं। उप्र के अवध क्षेत्र के गांवों में अगर किसी घर आप रात गुजारें तो हो सकता है किसी दादी, नानी के मुंह से आपको हीरामन सुआ एवं रानी पद्मावती की लोककथा सुनने को मिले। सुग्गा के मुंह से ही रानी पद्मावती का चरित्र एवं व्यक्तित्व विकसित होता है, जो बाद में चलकर मलिक मोहम्मद जायसी के 'पद्मावत' में विकसित होता हुआ रानी पद्मावती के रूप-गुण के वर्णन में शामिल हो जाता है। अगर यह कहें तो अतिशयोक्ति न होगी कि आज पद्मावती की जो छवि हमारे दिलो-दिमाग में मौजूद है वह

इतिहास एवं कल्पना, साहित्य एवं इतिहास, लौकिक एवं अलौकिक के सुंदर सम्मिश्रण से बनी है। वृतांत एवं कथा के इस चरित्र की छवि निर्माण में बड़ी भूमिका है। लोक की रचनात्मक कल्पना ने इस चरित्र में अनेक रंग भरे हैं। पद्मावती की जो लोकप्रिय छवि है वह किसी जाति, धर्म एवं क्षेत्र की छवि न होकर सबकी या यूं कहें कि व्यापक लोक की छवि है। ऐसे में हमें अपने भीतर अत्यंत समावेशी व्यापकता एवं उदारता विकसित कर इस लोकप्रिय छवि को याद करना होगा।

हमारे समक्ष एक तरफ हीरामन सुआ की कथा है तो दूसरी तरफ रानी पद्मावती का अस्मिता वृतांत। इस अस्मिता वृतांत को किसी जाति, क्षेत्र एवं धर्म में कहीं न कहीं जड़ एवं रूढ़ कर दिया गया है, जबकि कथा में इसका प्रसार व्यापक है। एक ही चरित्र एवं विषय पर निर्मित 'कथा एवं अस्मिता वृतांत' को अगर आमने-सामने रखें तो साफ दिखेगा कि जहां कथा हमें व्यापक, समावेशी और उदार बनाती है वहीं अस्मिता वृतांत हमें जड़, रूढ़, अनुदार एवं हिंसक बनाता है। कथा अपने कथ्य एवं प्रारूप में बदलते समाज से तालमेल बैठाने के लिए तैयार कर लेती है, वहीं अस्मिता वृतांत अत्यंत जड़ होकर समाज में 'बनाम' का भाव सृजित करता है। यही भाव समाज में हिंसा सृजित करता है। हीरामन सुआ एवं पद्मावती, दोनों एक कथा से निकले चरित्र हैं। हीरामन सुआ के मुंह से पद्मावती का चरित्र जन्म लेता है। यह अत्यंत रूपवान, गुणवान, परिवर्तनशील एवं विकासमान चरित्र है। इसे किसी जाति, स्थान एवं धर्म में जड़ करते ही यह अपना मूल गुण खो देता है। रूप के साथ उदारता, परिवर्तनशीलता जोड़ने एवं जुड़ने की क्षमता पद्मावती के प्रतीक एवं चरित्र का मूल गुण है। लोक की अद्भुत कल्पनाशीलता ने हीरामन सुआ एवं रानी पद्मावती को शक्ल दी है। यह हीरामन मात्र एक सुग्गा नहीं, बल्कि रचनात्मक कल्पनाशीलता, उदारता, समावेशन की एक प्रकार की 'संगम दृष्टि' है। हमें इस दृष्टि को अपने में पुनः जीवित करना होगा। किसी भी समाज की मूल आत्मा कल्पनाशीलता होती है जब हम कल्पनाशीलता को शक्ति, आधिपत्य एवं हिंसा सृजित भय से नियंत्रित करने लगते हैं तो धीरे-धीरे समाज क्षरण की ओर बढ़ने लगता है। इस प्रक्रिया से आगे बढ़ने पर अंत में हमारे हाथों 'एक मृत समाज' बचता है-एक ऐसे हीरामन सुग्गे की तरह जो अपनी आवाज खो चुका है। भारतीय समाज एक जीवंतमान समाज रहा है, इसका प्रमुख कारण वह सामाजिक कल्पनाशीलता ही है जिसने अनेक महान साहित्य एवं कथाओं को जन्म दिया है।

जनतंत्र के प्रसार के लिए कल्पनाशील समाज ही सर्वाधिक उपयुक्त भावभूमि होती है। जनतांत्रिक मूल्यों का विकास कल्पनाशील समाज ही कर पाता है। फिल्में यूं भी कथा के साथ अपनी प्रदर्शनपरकता, संवाद, ड्रामा इत्यादि के संयोग के कारण हममें अनेक प्रकार की कल्पनाशीलता को जन्म देती हैं। इसमें हम अपनी कल्पनाशीलता में जोड़ने-घटाने की असीम शक्ति पर जाते हैं। मैं यहां किसी चरित्र के गलत चित्रण के पक्ष में नहीं हूं, न ही मनोरंजन उद्योग के तौर-तरीकों का बचाव कर रहा हूं, बल्कि समाज में कल्पनाशीलता के महत्व को रेखांकित करते हुए उसे बचाने की दुहाई दे रहा हूं। मैं पद्मावत फिल्म पर उभरे विवाद, हिंसक टकराहट में उस हीरामन सुआ को खोज रहा हूं जो मात्र एक सुआ नहीं है, बल्कि हमारे लोक एवं समाज की दृष्टि का प्रतीक है। वह अच्छे मूल्यों को प्रोत्साहित करने और प्रेम संदेश ले जाने वाला सुग्गा है। कहां है वह सुआ? हो सकता है वह कहीं खो गया हो, कहीं चोटिल पड़ा हो। आइए गणतंत्र के इस पर्व पर हम सब मिलकर उस हीरामन सुआ को खोजें जिसने हमारी पद्मावती को कभी अवधी लोक में सृजित किया था।

(लेखक समाजशास्त्री एवं गोबिंद बल्लभपंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

गौरवशाली जीवन

किसी देवता को रिझाने से ज्यादा खुद देवता बन जाना ज्यादा सरल है। देवता संस्कृत के दिव् धातु से बना है जिसका अर्थ प्रकाश है। सूर्य को प्रथम एवं प्रत्यक्ष देवता इसीलिए कहा गया है कि वह प्रकाश के साथ जड़-चेतन को ऊर्जा देता है। जब खुद के या किसी अन्य के जीवन में अंधेरा दिखाई पड़े तो उसे आत्मबल की ऊर्जा देकर कोई भी व्यक्ति देवता की श्रेणी में खड़ा हो सकता है। मानव जब देवी-देवता की पूजा-आराधना करता है तो इस बात पर जरूर ध्यान दे कि जिस देवी-देवता की पूजा की जा रही है वे क्यों पूजनीय हुए? जिन कार्यों से वे पूजनीय और वंदनीय हुए वही आचरण पूजक को अपने जीवन में अपना कर पूजनीय व्यक्तित्व बनाने का कार्य करना चाहिए। ऐसा नहीं कि हम पूजा तो भगवान विष्णु, भगवान शंकर, मां दुर्गा की करें और आचरण रावण, जालंधर या लंकिनी-डंकिनी का करें। यह तो और घातक है। रावण, कंस या धृतराष्ट्र जैसे प्रतापी राजा तक हर पल डरे-डरे रहते रहे। डर व्यक्ति के शरीर और मन पर घातक असर डालता है।

कोई भी व्यक्ति छल-छद्म, धोखा-विश्वासघात, शोषण और उत्पीड़न में लगता है तो एक अज्ञात भय उसमें धीरे-धीरे समाने लगता है। जबकि सदाचार का जीवन जीने से आत्मबल मजबूत होता है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'धीरज, धर्म, मित्र अरू नारि, आपदकल परिखहौं चारि' चौपाई के माध्यम से यह संदेश दिया है कि जिंदगी में विपरीत स्थिति या अंधकार उक्त गुणों एवं मनुष्य की मनःस्थितियों की परीक्षा लेते हैं। इस हालत में सबसे पहले धैर्य बनाए रखना चाहिए। इसी के साथ सत्य एवं सदाचार को मजबूती से धारण रखना चाहिए। यदि इन सद्गुणों को छोड़कर आनन-फानन में बिना सोचे-समझे कोई नकारात्मक कदम उठा लेने पर उसके गंभीर परिणाम ही होंगे। फिर तो उसे छुपाने के लिए झूठ-फरेब का आवरण ओढ़ना पड़ता है जो मनुष्य को देवता नहीं दैत्य की श्रेणी में ले जाता है। मन में ग्लानि भी होने लगती है, लेकिन बाह्य स्तर पर आदर्श की बात करनी पड़ती है। जीवन में द्वंद्व उत्पन्न होता है। जो सर्वाधिक कष्टदायी स्थिति होती है। घर-परिवार या समाज में साहस के साथ खड़े होने में हिचक होती है। व्यक्ति खुद के हालात में इतना उलझ जाता है कि वह दूसरों की मदद की स्थिति में नहीं होता है।

सलिल पाण्डेय

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

आसियान से सीखे दक्षेस

भारत-आसियान दोस्ती का नया दौर शीर्षक से लिखे अपने लेख में सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सीन लूंग ने भारत-असियान की जुगलबंदी के कुछ फायदों पर अपना विचार रखा है। यह गर्व की बात है कि दुनिया आज भारत से हाथ मिला रही है। भारत-आसियान का एक ऐतिहासिक अध्याय गणतंत्र दिवस पर जुड़ने जा रहा है। इससे भारत के ही नहीं, बल्कि इसमें शामिल देशों के भी अच्छे दिनों की आस रखी जा सकती है। आसियान से अगर दक्षेस कुछ सीख ले तो उसकी कमियां दूर हो जाएंगी और विश्व की कई समस्याओं का भी हल निकल जाएगा। यहां यह भी कहना उचित होगा कि भारत अपने पड़ोसियों के साथ ही नहीं, बल्कि दूरदराज के देशों के साथ भी दोस्ती की मिठास घोलने की कोशिश करता आया है, लेकिन कुछ देश भारत के साथ हाथ ही मिलाते हैं दिल नहीं। वे दोस्ती की आड़ में दुश्मनी भी निकालने से बाज नहीं आते।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

गौरव का दिन

26 जनवरी 1950 का दिन एक ऐसा दिन है जब भारत को एक गणतांत्रिक राष्ट्र के रूप में मान्यता मिली थी। इसी दिन स्वतंत्र भारत के नए संविधान को लागू कर एक नए युग का सूत्रपात किया गया था। भारतीय जनता के लिए बहुत ही गर्व की बात थी कि देश के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को स्वतंत्र भारत के इतिहास में इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी गई जो भारत के नागरिकों के लिए गौरव की बात थी। यही कारण रहा जो हम हर वर्ष तभी 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

नीरज कुमार पाठक, नोएडा

सराहनीय निर्णय

राष्ट्रीय पर्वों पर देश के धार्मिक स्थलों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने से आपसी भाईचारा और देशप्रेम की भावना बढ़ेगी। सम्पूर्ण देश में 26 जनवरी और 15 अगस्त को ऐसा होना चाहिए। हरियाणा सरकार का इस बार गणतंत्र दिवस पर तमाम मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और गिरजाघरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने की शुरुआत अत्यंत ही सराहनीय है। हर जाति और धर्म के सैनिक देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं। भारत मां के उन वीर शहीद सपूतों को धर्म से ऊपर उठ कर सम्मान देना हमारा कर्तव्य बनता है।

आचार्य रामकुमार बघेल शास्त्री, पलवल

फिल्म का विरोध

फिल्म पद्मावत को लेकर हो रही तोड़फोड़ व आगजनी कदापि उचित नहीं है। इससे अपने ही देश की संपत्ति का नुकसान हो रहा है, फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली का कोई नुकसान नहीं हो रहा। विरोध करने वाले समस्त लोगों को समझना चाहिए कि लोकतंत्र में विरोध के बहुत से संवैधानिक तरीके हैं, जिनमे सबसे अच्छा तरीका है उस विवादास्पद फिल्म का सम्पूर्ण बहिष्कार। सिनेमा मालिकों को भी स्थिति की नजाकत को ध्यान में रखना चाहिए।

राजेंद्र गोयल, बल्लबगढ़, फरीदाबाद

लोकतंत्र का अर्थ

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के शब्दों में लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा शासन है। इस एक पंक्ति के आवाहन के साथ ही एक महत्वपूर्ण लोकतंत्र के आकांक्षी व्यक्ति ने जनता की ताकत को सारपूर्ण तरीके से बतला दिया था। अब हमेशा लोकतंत्र की यही परिभाषा सर्वमान्य रहेगी। आज भी लोकतांत्रिक देशों में जनतंत्र जनता की आवाज से सुशोभित है, लेकिन पुराने संस्कारों की जड़ें जो अब मजबूत होकर जहां कहीं भी उभर गईं हैं।

chandra10121997@gmail.com

युवाओं को सही मार्गदर्शन मिले

वर्तमान में भारत विश्व में सबसे ज्यादा युवाओं वाला देश है। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 35 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या युवाओं की है। इतना होने के बावजूद हमारा भारत विकासशील देशों की सूची में ही आता है। इसका कारण युवाओं को सही मार्ग न मिलना है। देश में नशा करने वालों की संख्या बहुत अधिक है और यह संख्या साल दर साल बढ़ रही है, इसमें ज्यादा संख्या युवाओं की है। यह हमारे देश के लिए बहुत गम्भीर समस्या है, क्योंकि युवा किसी देश का भविष्य होते हैं और युवाओं पर ही देश की नींव टिकी है। अगर किसी देश के युवाओं का उपयोग सही तरह से होगा तो उस देश को विकसित देश बनने से दुनिया की कोई ताकत नही रोक सकती। आज भी भारत में लगभग 2 करोड़ युवा बेरोजगार हैं और शिक्षा के स्तर को जानने के लिए आज के दौर में सरकारी सफाई कर्मचारी की नौकरी के लिए पीएचडी किए हुए लोग भी आवेदन करते हैं। इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि देश में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बहुत कम प्राप्त हो रहे हैं। सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का फायदा युवाओं को नही मिल पा रहा है। इसका कारण है कि उनका इन नौकरियों के रिक्त पदों के बारे में अज्ञान होना है। युवाओं को मार्ग दिखाना बेहद जरूरी है, क्योंकि इतनी बड़ी कार्यशील जनसंख्या अगर सही मार्ग पर अग्रसर होगी तो भविष्य में हमारा राष्ट्र एक ताकतवर देश बन सकता है। युवाओं का सदुपयोग करने के लिए उनकी योग्यता को बढ़ाना होगा। यह संभव होगा सुविधा संपन्न स्कूल-कालेजों की ज्यादा संख्या में स्थापना से। साथ ही औद्योगिक विकास भी जरूरी है, जिससे युवाओं को रोजगार मिल सके।

अखिल सिंघल, दिल्ली विवि, दिल्ली

ट्वीट-ट्वीट

आसियान देशों के शासनाध्यक्ष भारत में हैं। दुनिया देख रही है। गुंडों और जहर उगल रहे नेताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत गिरफ्तार किया जाना चाहिए। जब हम अपना गणतंत्र दिवस मना रहे हैं तब कानून के शासन पर अमल होना ही चाहिए। गौरव सी सावंत@gauravcsawant

दस आसियान देशों के नेता भारत में हैं। उम्मीद करती हूं कि वे पद्मावत विवाद की खबरों पर निगाह नहीं जमाए होंगे।
गुंजा कपूर@gunjakapoor

मैं खुद को जाति, भाषा, मजहब और निजी चाहत से परे रखने की आवाज बुलंद कर रहा हूं। गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर मैं अपना नाम हर्ष भारतीय कर रहा हूं। अगर आप भी 'एक भारत' में विश्वास करते हैं तो कृपया अपना सरनेम भारतीय कर लें।
हर्ष इंडियन@hvgoenka

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत हिंद महासागर और एशिया पर प्राचीन युग के सदियों पुराने अपने प्रभाव को नए सिरे से जमा रहा है। वृहद भारत का फिर से जन्म!
डॉ. डेविड फ्राउली@davidfrawleyved

गणतंत्र दिवस पर आसियान नेताओं का अतिथि के तौर पर होना असाधारण है, जो भारत के बढ़ते वैश्विक कद की पुष्टि है।
शेफाली वैद्य@ShefVaidya

जनपथ

जैसी मर्जी बांचिए अपने मन का मंत्र,
आग लगाओ देश में ये अपना गणतंत्र।
ये अपना गणतंत्र तोप-तलवार चलाओ,
भूल सभी कर्तव्य सिर्फ अधिकार जताओ।
समझ लीजिए आप गई पानी में भैंसी,
रही अगर इस भांति दिख रही स्थिति जैसी।
– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 28 अंक 192